BA Part - III
History

By - Dr. Durga Bhawani

B A Part III History (Hons) VIIth Paper.

Date / /
Page

Q. 1911 ई० की चीनी क्रांति के कारणों का वर्णन करें।

Ans:- बॉक्सर विद्रोह के समय मंचू सरकार की नीतियों ने मंचू सरकार के अस्तित्व पर एक प्रश्न चिन्ह खड़ा कर दिया था। जनता में घोर असन्तोष था अत: मंचू प्रशासन के सामने केवल दो विकल्प थे पहला - अपनी अक्षमता को स्वीकार करते हुए गद्दी छोड़ दे दूसरा - साम्राज्य को प्रशस्त कर प्रजा की स्थिति में सुधार करें।

इन दोनों विकल्पों में प्रथम से तो वंश का अस्तित्व ही खतरे में था, अत: राजमाता ने दूसरे विकल्प का आश्रय लेते हुए स्थिति को संभालने का प्रयत्न किया और तुरन्त घोषित किया — "आज हमारे समक्ष सबसे बड़ी आवश्यकता साम्राज्य को शक्तिशाली बनाना प्रजा के हित में है। विदेशों में प्रचलित उत्तम प्रणालियों का प्रयोग कर हमें अपनी गलतियों से छुटकारा पाना चाहिए और पुरानी की गई त्रुटियों को बुद्धिमत्तापूर्वक स्वीकार करते हुए भविष्य का निर्माण करना चाहिए।"

राजमाता द्वारा सुधारों का आश्रय वास्तव में एक भुलावा था। यह चीनी जनता को संवैधानिक शासन की छाया दिखाकर मंचू प्रशासन के लिए समर्थन का एक ढकोसला ही था। सच तो यह है कि 20वीं सदी में राजनीतिक चेतना की जो पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी थी, उसे एक ऐसी क्रान्ति को जन्म देना ही था, जो मंचू वंश का उन्मूलन कर चीन में गणतंत्र की स्थापना कर देती।

इस क्रांति के निम्नलिखित कारण थे :-

(1) विदेशी हस्तक्षेप- 19 वीं सदी का आरंभ चीन में पश्चिमी साम्राज्यवादी शक्तियों के प्रवेश के साथ जिस प्रकार सामने आया था, आगे चलकर चीन के लिए अत्यन्त अहितकारी साबित हुआ। इंगलैंड, फ्रांस, जापान, अमेरिका एवं रूस ने चीन पर अपना-अपना प्रभुत्व स्थापित करने के प्रयत्न में चीन का शोषण शुरू कर दिया था।

Date / /
Page

19 वीं सदी के अन्त तक आते आते चीन ने विश्व सभ्यता के केन्द्र होने के गौरव को खो दिया। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि यूरोपीय शक्तियों ने चीन पर अपना प्रभाव बनाकर जो ~~संधियां~~ संधियाँ की थीं उनसे प्राप्त विशेषाधिकारों के कारण वे चीन पर हावी हो गए और 20 वीं सदी के आरंभ तक चीन नाममात्र के लिए स्वतंत्र देश रह गया और अब विदेशी हस्तक्षेप से देश को बचाने के लिए मात्र क्रांति का सहारा रह गया था।

(2) **मंचू प्रशासन के प्रति घृणा** — चीन में मंचू प्रशासन 1644 ई० से चला आ रहा था। मंचू शासकों ने जिस प्रकार विदेशी शक्तियों का सहयोग लेकर विद्रोह को कुचला था, उससे आम धारणा बन गई थी कि विदेशी प्रभाव के लिए मंचू वंश पूर्णत: उत्तरदायी है। देश में पड़ रहे अकालों एवं लूटमार से चीन की रक्षा करने में प्रशासन असफल रहा। अत: स्वर्गिक साम्राज्य को अधोगति तक पहुँचाने के लिए मंचू वंश को उत्तरदायी मानने वाली चीन की जनता मंचू वंश को ~~उत्तरदायी मानने वाली~~ ही उखाड़ देना चाहती थी। पोर्टर ने ठीक ही लिखा है — "The Manchu dynasty had been in decline since the close of the eighteenth century and was unable to offer dynamic leadership to the country. Its corruption and incompetence had brought repeated disasters to china."

अर्थात "18 वीं सदी के अंत से ही मंचू वंश का पतन हो चुका था तथा वह देश को गतिशील नेतृत्व प्रदान करने में असफल रहा था। उसकी अक्षमता तथा उसमें व्याप्त भ्रष्टाचार ने चीन को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया।"

(3) संसदीय शासन व्यवस्था की माँग की उपेक्षा — मंचू वंश की शासकों ने अपनी अलोकप्रियता को कम करने के उद्देश्य से चीन में सुधार कार्यक्रमों को लागू करने का प्रयत्न किया। चीन में चल रहे सुधार आन्दोलनों की उग्रता ने प्रतिक्रियावादी शासक वर्ग को सुधार कार्यक्रम लागू करने पर विवश कर दिया। सैन्य व्यवस्था एवं शिक्षा में सुधार किए गए।

1910 में चीन में पहली बार राष्ट्रीय सभा का गठन हुआ। सुधारवादियों ने इन सुधारों से प्रोत्साहित होकर संसदीय शासन और वैध राजसत्ता की स्थापना की माँग कर शुरु कर दिया। शासक वर्ग ने समय के वेग को न समझ कर संसदीय व्यवस्था की माँग को ठुकरा दिया अतः सुधारवादियों ने मंचू वंश को उखाड़ने का संकल्प ले लिया।

(4) जनसंख्या में वृद्धि एवं प्राकृतिक प्रकोप — 20वीं सदी के आरंभ में चीन की जनसंख्या में जिस प्रकार से वृद्धि हुई, उस अनुपात में आधुनिक साधनों के अभाव में उत्पादन में वृद्धि नहीं हुई। अतः भुखमरी, भ्रष्टाचार, गरीबी एवं लूटपाट को बल मिला, जिससे आर्थिक असन्तोष व्याप्त हो गया। उस पर से प्राकृतिक प्रकोपों ने कहर बरपा दिया। 1910-11 में चीनी नदियों में बाढ़ आ गई, जिससे अत्यधिक नुकसान हुआ। ब्राउन के शब्दों में "In 1910-11 normal conditions of production were again disturbed in the central provinces, the worst in forty years. Millions of people were made homeless for the third time in five years, added the horrors of famine and pestilence." अर्थात 1910-11 ई० में मध्य प्रांतों में उत्पादन की स्थितियाँ पिछले 40 वर्षों में सबसे खराब हो गयी थीं। पिछले पाँच सालों में तीसरी बार लाखों लोगों को बेघर हो जाने से स्थिति को और गम्भीर बना दिया।

मंचू प्रशासन इस गम्भीर आर्थिक संकट का सामना नहीं कर सका और चीनी जनता में व्याप्त असंतोष ने धधकती ज्वाला के रूप में, उग्र स्वरूप दे दिया।

(5) प्रवासी मजदूर वर्ग का प्रभाव — चीन की असंतुलित आर्थिक स्थिति ने चीन के लोगों में विदेश ~~प्रवा~~ पलायन की प्रवृत्ति को जनम दिया। इनमें चीन के ~~अनप~~ अनपढ़ मजदूर वर्ग के लोग भी शामिल थे जो आजिविका की खोज में विदेश चले गए थे, अमेरिका हवाई ~~द्वि~~ द्वीप, फिलीपीन द्वीप समूह, मलय प्रायद्वीप, मलय राजसंघ, सिंगापुर एवं कनाडा में इस वर्ग के चीनी लोग विद्यमान थे। इस प्रकार ये प्रवासी मजदूर वर्ग के चीन में अपने परिजनों को अर्जित धन भेजना शुरू कर दिया। इस प्रकार प्रवासी जनों ने आर्थिक रूप से पिछड़े चीनी मजदूर वर्ग में क्रांति की भावना का विकास कर दिया।

(6) बौद्धिक जागरण — 1905 ई० में चीन में प्राचीन परीक्षा पद्धति की समाप्ति एवं आधुनिक शिक्षा की महत्ता ने अनेक चीनी विद्यार्थियों को विदेशों में शिक्षा ग्रहण के लिए प्रेरित किया। दूसरा ईसाई मिशनरियाँ भी प्रतिवर्ष अच्छे विद्यार्थियों को पढ़ने विदेशों में भेजती थी। वहाँ की शिक्षा, शासन पद्धति एवं रहन-सहन का उनपर गहरा प्रभाव पड़ा।

1898 ई० में जापान में "ताओ-दो-बुन-काई" की स्थापना हुई, इसका मूल उद्देश्य चीनी समस्याओं का अध्ययन करना था।

लियांग-ची-चाओ ने पश्चिमी सभ्यता का अध्ययन कर 1898 ई० में चिंग-इ-पाओ तथा 1902 ई० में शिंन-मिन-टसुंगपाओ नामक पत्रिकाएँ प्रकाशित की। थांग-टसाह-चांग ने हेनान में त्सु-ली-हुई नामक संस्था की स्थापना की।

19 वीं सदी के अन्त तक चीन में समाचार पत्रों का प्रकाशन भी आरंभ हो गया था तथा सर्वप्रथम चीन ने छापाखाना का भी आविष्कार किया और इस प्रकार पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के आलोक में बौद्धिक जागरण का जो एक बेग शुरू हुआ, उसने चीन में क्रांतिकारी बीज बोने में अहम भूमिका निभाई।

(7) **डॉ० सनयात सेन का नेतृत्व** – चीनी क्रांति के जनक डॉ० सनयात सेन ने चीन की क्रांति के लिए बौद्धिक एवं क्रांतिकारी पृष्ठभूमि तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। उन्होंने चीन की दुर्दशा का मूल कारण मंचू वंश को मानकर क्रांतिकारी संस्था 'हिसंग-चुंग-हुई' की स्थापना की जिसे बाद में 'कुंग-मेंग-हुई' का नाम दिया गया। डॉ० सेन के क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित होकर चीनी विद्यार्थियों ने उनका समर्थन किया था। विनाकी के शब्दों में —

"Sunyat Sen's leadership in these revolutionary orgnizations was based on his personality." अर्थात

"सनयात सेन का नेतृत्व इन क्रांतिकारी संगठनों में उसके व्यक्तित्व पर आधारित था।"

'कुंग-मेंग-हुई' नामक संस्था ने मिन-पाओ से एक पत्र प्रकाशित करना शुरू किया। वास्तव में, 1911 ई० क्रांति से पूर्व होने वाले 1906 एवं 1908 के विद्रोहों पर डा० सेन के विचारों की छाप स्पष्ट थी।

(8) **तात्कालिक कारण** – 1909 ई० एवं 1911 ई० के बीच केन्द्र द्वारा अपनाई गई रेलवे लाइनों के निर्माण की नीति एवं हॉकों की घटना क्रांति का तात्कालिक कारण बनी। पीकिंग की केन्द्रीय सरकार ने रेलवे लाइनों के निर्माण हेतु विदेशी फार्मों के अनुबंध स्वीकार कर लिए थे और चीन के विभिन्न प्रान्तों में विदेशी फर्में रेलवे लाइनों का निर्माण कर रही थीं।

Date / /
Page

परन्तु अनेक प्रांतों में यह आवाज उठने लगी कि रेलवे लाईनों के निर्माण में चीनी पूँजी व्यय होनी चाहिए और इसका नियंत्रण एवं संचालन प्रांतीय आधार पर होना चाहिए। इस विरोध ने केन्द्र व प्रांतीय विरोध का रूप ले लिया और 1905 ई० में इसी प्रश्न पर "अधिकार वापस लो" आन्दोलन का सूत्रपात्र हुआ।

जब यह आन्दोलन अपने चरम विकास में था, उसी समय 10 अक्टूबर 1911 ई० को हांको की एक रूसी बस्ती के एक घर में बम विस्फोट हुआ। यह घर क्रांतिकारियों का बम बनाने का अड्डा था। रूसी बस्ती में बम फटने से रूसी अधिकारियों ने तुरन्त कार्यवाही कर मंचू सरकार को तख्ता पलटने का प्रयत्न करने वाले अनेक विद्रोहियों को गिरफ्तार कर चीनी वायसराय के अधीन कर दिया, इस पर सेना में स्थित क्रांतिकारियों ने वायसराय के दफ्तर में आग लगा दी। चीनी सेनापति एवं वायसराय शहर से बाहर चले गए।

कर्नल ली युआन हुंग के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने वूचांग पर अधिकार कर लिया। 12 अक्टूबर 1911 ई० को हांको पर अधिकार कर लिया गया और क्रांतिकारियों ने एक काम चलाऊ सरकार की घोषणा की जिसका अध्यक्ष ली युआन हुंग को बनाया गया।

इस सरकार ने एक प्रज्ञप्ति जारी कर चीन के सभी प्रांतों एवं नगरों से मंचू वंश को सत्ता से उखाड़ फेंकने की अपील की। इस प्रकार सम्पूर्ण चीन में क्रांति का आरंभ हो गया।

——— x ———